सम्पादक की कलम से

गुरू

गु–गुफा, रू–रूह (प्रकाश गुरू का पूर्ण अर्थ होता है गुफा (एक निश्चित परिधि में घिरना) से बाहर निकालने वाली रूह (प्रकाश)।

अशोक'मानव'

अर्थात् जगत के यथार्थ को दिखाते हुए विषयात्मक घेरे से बाहर निकाल कर सत्य की ओर ले जाने वाला। जीवन में सही मार्ग को दिखाने वाला गुरू होता है। गुरू जीवन में किसी भी रूप में आ सकता है। जीवन का सही मार्ग दिखाने वाला पहला गुरू माँ होती है। इसके बाद अन्य रिश्ते भी गुरू का कार्य करते हैं। जीवन में कुछ बनकर स्थापित होने की शिक्षा शिक्षक गुरू करते है। पर जीवन में गुरू का वास्तविक अर्थ अध्यात्मिक गुरू से शुरू होता है जो जीवन को इस जगत की जीने की कला बताते हुए इष्ट से मिलाने की क्रिया करते है। गुरू अन्धेरी गुफा से निकालकर प्रकाश की तरफ ले जाते हैं। गुरू एक पवित्र नाम है जो विश्वास में जन्म लेता है। इसलिए गुरू के प्रति अटूट विश्वास होना चाहिए। जिसमें गुरूत्व हो उसे ही अपना गुरू बनाना चाहिए। गुरू बनाने से पूर्व चाहे जितना विचार कर ले पर गुरू बनाने के बाद सिर्फ विश्वास बचता है। ऐसा करने से गुरू की वह शक्ति मिलने लगती है जिसका सम्बन्ध गुरू मण्डल से होता है।

वर्तमान समय में आडम्बरी गुरू समाज में आ गये हैं जिसमें से गुरू निकाल पाना कठिन हो गया। अक्सर लोग गुरू करने में धोखा खा जाते है। ऐसी परिस्थिति में महा गुरू का सहयोग लेना चाहिए। महा गुरू हर व्यक्ति के साथ होता है और वह है 'मन' । मन प्रकाश पुंज है। मन ही हर व्यक्ति को रास्ता दिखाता है। मन खोजी यंत्र (सर्च इंजन) है। जो हर विषय के निष्कर्श को निकाल देता है। मन ही वह महा गुरू है जो हर अन्धेरी गुफा से बाहर निकालता है। वर्तमान समय में हर व्यक्ति का मन कमजोर हो गया है। पर मन कमजोर नही है बल्कि व्यक्ति अनेकों विषय में मन को उलझा देता है। जिस प्रकार कम्प्यूटर की अनेकों फाइल एक साथ खोलने पर रूक जाता है। जिसे हैंग करना कहते है क्रमशः एक–एक फाइल खोलने पर वह हर फाइल को खोल देता है। ठीक उसी प्रकार मन से एक विषय की जानकारी एक समय में ले तो उसकी पुर्ण जानकारी दे देता है जिसका उत्तर मानव मस्तिष्क पर अंकित होता रहता है। ऐसा करते समय दूसरे विषय को तब तक न आने दे जब तक कि जिस विषय की जानकारी ले रहे थे। उसकी पूर्ण जानकारी न मिल जाय। इस विद्या से मानव अपने महागुरू मन से हर रास्ते की जानकारी प्राप्त कर सकता है और अन्धेरी गुफा से बाहर निकल सकता है। महागुरू मन ही आप को हर मार्ग की सही जानकारी दे सकता है। अन्य लोग हो सकता है अपना हित देखते हुए आप को रास्ता दिखाये पर महागुरू सिर्फ आप के हित को देखते हुए रास्ता दिखाता है। विषय मुक्त होकर मन से आप कुछ भी देख सकते है और किसी भी विषय की जानकारी प्राप्त कर सकते है। मन सूक्ष्म (जो ऊर्जा स्वरूप में है) विषय की जानकारी दे सकता है। जो मस्तिष्क में दृश्य रूप में अथवा भाव रूप में अंकित होता है। जब व्यक्ति किसी विषय की अंधेरी गुफा में घिर जाता है तब मन ही उसे उस अन्धेरी गुफा से बाहर निकाल पाता है। मन शरीर को चलाने वाला सबसे बड़ा गुरू है। लोगों की शिकायत होती है कि मन ही तो चारों तरफ भटकाता रहता है। यह एक भ्रम है मन किसी को नही भटकाता है बल्कि लोग मन को भटकाते रहते है। इसे भटकाने का कारण लोभ है जिसके लिए लोग अनेको इच्छायें पैदा करते रहते है । स्वयं अस्थिर रहते है जिसके कारण मन अनेकों जगह घूमता रहता है। मन तो वह महान गुरू है जो कभी नही रूकता न ही कही जाने के लिए मना करता है। शरीर थक जाता है। पर वह तो कभी थकता भी नही है। शरीर रूपी गुरू से एक प्रश्न अनेक बार कर लिजिए तो क्रोधित भी हो जाता है। पर आप का महान गुरू तो कभी क्रोधित नही होता है। शरीर पूर्ण ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म अंश मौजूद होता है। यदि इसके हर अंग को सक्रिय कर दिया जाय तो व्यक्ति स्वंय हर आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है। शरीर में सभी ग्रह पदार्थ का अंश मौजूद होता है। जो सूक्ष्म रूप से अपनी आवश्यकता की पूर्ति करता रहता है। मन उसी ब्रह्माण्ड का सूक्ष्म स्वरूप है। जो ब्रहमाण्ड के गुरू से निकलता है। आवश्यकता है उसे सक्रिय करने की । सक्रिय करने की कला आ जाने के बाद वह महान गुरू बन जाता है। जो महागुरू का रूप लेता है। सक्षम गुरू न मिल पाने तक अपने महागुरू के नेतृत्व में काम करते रहना चाहिये। यदि सक्षम गुरू न मिल पाये तो अपने इसी महागुरू से मन शान्त करके जीवन का रास्ता पूछते रहिये। यह आप को हर रास्ता दिखायेगा और हर अन्धेरी गुफा से बाहर निकालता रहेगा।

सक्षम गुरू की तलाश करने के लिये अपने महागुरू का सहयोग लेना चाहिए। आप का महागुरू ही आप को सक्षम गुरू तक पहुँचायेगा। शिष्य के अनेको कर्त्तव्य बताये गये है पर गुरू का भी अपना धर्म होता है और वह है जितना ज्ञान है उस विधा की पूर्ण जानकारी देना। अक्सर यह सुनने में आता है कि गुरू एक ज्ञान अपने पास बचाकर रखता है उसे डर होता है कि शिष्य मुझसे आगे न निकल जाय। ऐसा करने वाला पूर्ण गुरू नही होता है । उसे हर विधा की जानकारी देनी चाहिये। जो जैसा होता है वैसा ही दूसरे को बनाता है। यदि गुरू है तो उसे गुरू बनाना चाहिये शिष्य नही । जिस तरह की मिट्टी होती है उस पर प्रकाश पड़ने के बाद उसी गुण का विकास होता है। गुरू एक प्रकाश है। इसलिये शिष्य के आगे निकल जाने का डर नही होना चाहिए। पूर्ण ज्ञान देने से मिट्टी के गुण का पूर्ण विकास हो जाता है। जिस गुण का पौधा होता है प्रकाश पड़ने के बाद उसमें उसी गुण का फल लगता है आम के पेड़ पर प्रकाश पड़ने के बाद आम का ही फल लगता है केले का नही । इसलिये ज्ञान की विधा की पूर्ण जानकारी देनी चाहिये। कोई न किसी से आगे जाता है और न ही कोई किसी से पीछे रहता है। हर व्यक्ति का अपना का अपना महत्व होता है। जिसके लिये आता है उसी गुण को छोड़ जाता है ।बस गुरू प्रकाश पड़ने से उसके गुण का पूर्ण विकास हो जाता है। इसी के साथ आप सब को गुरू पूर्णिमा की हार्दिक बधाई। जय गुरू।